

# ONE DAY BIBLE STUDY PROGRAM

Zion Prayer Fellowship, Chanamunda, Dist: Nuapada, Date: 05 April 2025

Guest Speaker: Rev. Shailendra Nanda

## शिष्य कैसे बनें?

प्रभु ने पहले ही स्पष्ट कर दिया है कि जो मेरे वचनों में बना रहेगा, वही मेरा सच्चा शिष्य ठहरेगा।  
परंतु क्या यह उतना ही सरल है, जितना सुनने में प्रतीत होता है?  
वास्तव में, किस प्रकार का विश्वास रखने वाला व्यक्ति प्रभु के वचनों में स्थिर रह सकता है?

प्रेरित पतरस ने कहा है:

**"इसलिए सब प्रकार की बैर भावना, छल, कपट, डाह और निंदा को दूर करके, नये जन्मे हुए बच्चों के समान उस निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिए बढ़ते जाओ, क्योंकि तुमने प्रभु की कृपा का स्वाद चख लिया है।"** — 1 पतरस 2:1-3

अब हम यह समझ सकते हैं कि हमें प्रभु के वचन की कैसी भूख रखनी चाहिए—किसी प्रौढ़ व्यक्ति की भाँति नहीं, जो हर समस्या के लिए अलग-अलग साधन ढूँढता है,  
बल्कि उस नवजात शिशु की तरह जो हर परिस्थिति में केवल एक ही चीज़ पर निर्भर रहता है—अपनी माँ के निर्मल दूध पर।  
वह हर आधे घंटे में दूध चाहता है। उसे किसी विकल्प की आवश्यकता नहीं होती।

पतरस यही कहने का प्रयास कर रहे हैं कि हमें भी उसी नवजात शिशु की भाँति अपने परमेश्वर के वचन के लिए लालसा करनी चाहिए, क्योंकि हमने उसकी कृपा का स्वाद चख लिया है।

प्रभु का वचन न केवल आत्मिक रूप से हमें दृढ़ बनाता है,  
बल्कि हमारे जीवन के अंधकार को अपने प्रकाश से दूर करता है।  
इसलिए हमें इस वचन को एक दीपक के समान अपने मन में रखना चाहिए—  
जो हमारे जीवन की कठिनाइयों में तब तक साथ देता है जब तक वह कठिनाई दूर न हो जाए।

इसी बात को पतरस अत्यंत प्रेमपूर्वक अपने विश्वासियों से समझाते हुए कहते हैं:

**"और हमारे पास जो भविष्यद्वक्ताओं का वचन है, वह इस घटना से दृढ़ ठहरा है;  
और तुम यह अच्छा करते हो, कि जो यह समझ कर उस पर ध्यान करते हो, कि वह एक दीया है,  
जो अंधियारे स्थान में उस समय तक प्रकाश देता रहता है जब तक कि पौ न फटे,  
और भोर का तारा तुम्हारे हृदयों में न चमक उठे।"** — 2 पतरस 1:19

यहाँ बात केवल मुसीबत दूर होने तक वचन में बने रहने की नहीं है,  
बल्कि जब तक **भोर का तारा**, जो स्वयं यीशु मसीह को दर्शाता है,  
हमारे हृदयों में न चमक उठे, तब तक हमें वचन में बने रहना है।

क्योंकि वचन से ही हम सीखते हैं, और एक शिष्य बनने के लिए तीन गुण आवश्यक हैं:

1. सीखने की इच्छा रखना
2. मसीह का अनुसरण करने का साहस रखना
3. उसी का अनुकरण करना

क्योंकि वास्तव में वही एक है जो इन सभी बातों के योग्य है—उसके सिवा कोई और नहीं।

परंतु, मेरे प्रियजनों, यह इतना सरल नहीं है,  
क्योंकि स्वयं यीशु ने कहा:

**"लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं,  
पर मनुष्य के पुत्र को सिर धरने की भी जगह नहीं।"**  
— लूका 9:58

इसलिए केवल वही उसके पीछे चल सकता है जो इस सब के लिए तैयार हो।

परंतु दुर्भाग्यवश, बाइबल हमें बताती है कि बहुत से लोग इसके विपरीत थे।  
जब वास्तव में पीछे चलने की बात आई, तो उन्होंने एक से बढ़कर एक बहाने बना लिए:

1. "हे प्रभु, मुझे पहले जाने दे कि अपने पिता को गाड़ दूँ।" — लूका 9:59
2. "मैंने खेत मोल लिया है, और अवश्य है कि उसे देखूँ।" — लूका 14:18
3. "मैंने पाँच जोड़े बैल खरीदे हैं, और उन्हें परखने जा रहा हूँ।" — लूका 14:19
4. "मैंने विवाह किया है, इसलिए मैं नहीं आ सकता।" — लूका 14:20

ये सभी वही लोग थे जो यीशु के पीछे चलना चाहते थे,  
परंतु वे भिन्न-भिन्न प्रकार के बंधनों में जकड़े हुए थे।

कोई सामाजिक परंपराओं के बंधन में था,  
कोई अपनी संपत्ति के,  
कोई जीविका के,  
और कोई संसारिक सुख-सुविधाओं के बंधन में।

मैं और हम में से बहुत से लोग आज भी ऐसे ही किसी न किसी बंधन में बंधे हुए हैं।  
और जब तक हम इनसे मुक्त नहीं होते, तब तक हम न तो मसीह का अनुसरण कर सकते हैं,  
और न ही उसका अनुकरण।  
और यदि हम ऐसा नहीं कर सकते, तो हम उसके शिष्य कैसे कहला सकते हैं?

हमें हर प्रकार से तैयार रहना होगा।  
मसीह के पीछे चलने के लिए,  
और उसका शिष्य बनने के लिए,  
हमें सब कुछ खोने के लिए भी तैयार रहना होगा।

क्योंकि वह स्वयं कहता है:

"यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और बच्चों और भाइयों और बहनों,  
वरन् अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।"

— लूका 14:26

इसलिए यदि हम समझें कि यीशु का शिष्य बनने के लिए क्या-क्या शर्तें हैं,  
तो बहुत-सी बातें सामने आएँगी,  
परंतु उनमें से कुछ मुख्य बातें इस प्रकार हैं:

1. अपने आप को और संसार की सभी वस्तुओं को त्याग कर उसके पीछे हो लेना
2. नवजात शिशु की तरह उसके वचन की लालसा करना
3. वचन अर्थात् आत्मा से नया जन्म लेना

अब यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम इस बात की पुष्टि करें:  
क्या हम वास्तव में यीशु मसीह के सच्चे शिष्य बनने के लिए तैयार हैं?  
या फिर आज भी केवल एक *विश्वासी* बनकर यीशु का *उपयोग* भर कर रहे हैं?

## धन्य हैं हमारे येशु और धन्य है उनका प्रेम

Led by the Holy Spirit, Guided by Faith and Scripture  
Biblical Commentary by Sonu Kumar Saha  
Date: 5<sup>th</sup> April 2025  
Contact: sks.officeuse@gmail.com

---

I sincerely thank our respected Guest Speaker, Rev. Shailendra Nanda, for teaching this topic so profoundly and clearly. His guidance has been a great blessing, enriching both my knowledge and faith. May God continue to bless him abundantly.

**With gratitude,**  
Sonu Kumar Saha